

د्वतीय दारस

الدرس الثاني

निम्ने नामाय सम्पकीय किछु गुरुत्वपूर्ण विषय उल्लेख करा हऱ्छेः

१। जामाआतेर साथे नामाय आदाय करा पुरुषदेर उपर ओयाजिब। कारण, हदीसे एसेछे,

((لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَمُرَّ بِالصَّلَاةِ فَتُقَامَ ثُمَّ أَخَالَفَ إِلَىٰ مَنَازِلِ قَوْمٍ لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ فَأَحْرَقَ عَلَيْهِمْ)) متفق عليه

“आमि इच्छा करि ये, काउके नामाय पड़ानोर निर्देश दिये एमन लोकदेर निकट याई, यारा नामाये उपस्थित हय नाई एवं तादेरके ज्वालिये देई।” (बुखारी २४२-मुसलिम ७५१)

२। धीरस्त्रितार साथे आगेभागे मसजिदे याओया मुसलिमेर जन्य श्रेया।

३। मसजिदे प्रवेशकारीर जन्य सुनात हलो, स्वीय डान पा आगे बाड़िये एई दुआ पड़ा,

((اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ)) رواه مسلم १७०२

“आल्लाहम्माफताहली आबओयाबा राहतिका” (हे आल्लाह! आमर जन्य तोमार रहमतेर दरजा खुले दाओ।”

४। मसजिदे प्रवेश करे बसार पूर्वे ‘तहियातुल मसजिद’ (दाखेली मसजिद) दु’राकआत नामाय पड़ा सुनात। कारण, आवू क्वातादा-ﷺ-थेके वर्णित हदीसे एसेछे, रासूलुल्लाह-ﷺ-बलेछेन,

“यखन तोमादेर मध्ये केउ मसजिदे प्रवेश करे, तखन से येन बसार पूर्वे दु’राकआत नामाय पड़े नेया।” (बुखारी ४४४-मुसलिम ११४)

५। नामाये लज्जास्थान टाका ओयाजिब। पुरुषदेर लज्जास्थान हलो, नाभि थेके हाँटु पर्यन्त। आर महिलादेर सर्वाङ्गई लज्जास्थान। तबे नामाये मुखमन्डल खुले राखते पारबे।

६। केवल्लाके सम्मुख करे नामाय पड़ा ओयाजिब। नामाय कुबल हओयार जन्य एटा शर्त। तबे यदि कोन प्रतिबन्धकता থাকे, येमन असुस्तता इत्यादि (ताहले केवल्लाके सम्मुख करते ना पारलेओ कोन दोष नेई)।

७। नामायके तार सठिक समये आदाय करा ओयाजिब। ताई समयेर पूर्वे नामाय पड़ा ठिक नय। अनुरूप बिलम्ब करे नामाय पड़ाओ हराम।

८। उचित हलो, नामायेर जन्य आगेभागे याओया। प्रथम कातारे दाँडानोर आग्रह राखा एवं नामायेर जन्य अपेक्षा करा। कारण, ए काजगुल्लोर बड़ फयीलत। येमन आवू हरायरा-ﷺ-थेके। तिनि बलेन, रासूलुल्लाह-ﷺ-बलेछेन,

“लोके यदि जानतो आघान देओया ओ नामायेर प्रथम कातारेर मध्ये कि (परिमाण साओयाब) आछे, अतःपर लटारी छाड़ा सेगुलो हासिल करा यदि सम्भव ना हतो, ताहले तारा अवश्याई लटारी करतो। आर यदि तारा नामाये आगे आसार मध्ये कि (परिमाण साओयाब) आछे ता जानतो, ताहले सेदिके अग्रवर्ती हओयार जन्य प्रतियोगिता करतो।” (बुखारी ७१५-मुसलिम ४३१)

आवू हरायरा-ﷺ-थेकेई वर्णित, रासूलुल्लाह-ﷺ-बलेछेन, “यतम्फण नामायेर जन्य अपेक्षा कोन व्यक्तिके आटके राखे, ततम्फण से नामायेई थाके।” (बुखारी ७५९-मुसलिम ७४९)